सर्वोच्च गुरू शिखर पर सतगुरू परमात्मा शिव का महापरिवर्तन कार्य

किसी भी कार्य का प्रमाण सभी चाहते हैं, होना भी यही चाहिए। लेकिन सत्य को जानना कि यही सत्य है, उसके लिए उतनी शक्तिशाली बुद्धि की परख शक्ति भी चाहिए। भगवान है, सत्य है और वो माउण्ट आबू में ही आते हैं, इसका प्रमाण है। दुनिया भर में लाखों संस्थाएं हैं, लेकिन संस्थाओं का कार्यभार सम्भालने वालों के मन में कुछ दिनों के बाद विकृत भाव उत्पन्न हो ही जाते हैं। क्योंकि शांति कुछ दिनों में लोगों की क्षीण होने लग जाती है। लोगों के अन्दर नाम, मान, शान का भाव आ ही जाता है। इसीलिए शायद परमात्मा द्वारा संचालित एक मात्र संस्था जहाँ पर विकृति आ ही नहीं सकती है।

करावनहार परमात्मा हम केवल निमित्त

हाँ सभी की भावना परमात्मा के साथ हो जाए, कार्य करते हुए सभी मन से एक ही बात कहते हैं, सबकुछ बाबा (परमात्मा) करा रहे हैं। यहां किसी से भी पूछ लो, वो ये ही कहते हैं कि हम निमित्त हैं, करावनहार करा रहा है। शायद इसीलिए कार्य अच्छी तरह से होते हैं। यदि कोई व्यक्ति इसे करवाता, तो करने वाला कुछ ना कुछ तो बोल ही देता कि मैं ही क्यों करूँ! लेकिन यहाँ हर एक ब्रह्मा वत्स यही सोचकर कार्य करते कि ये परमात्मा का कार्य है।

यहाँ स्वतंत्रता के साथ सभ्यता भी

आप देखिये, जहाँ स्वतंत्रता होती है वहाँ पर कार्य सही होते हैं। यहाँ स्वतंत्रता के साथ मर्यादा, सभ्यता व धारणा भी भगवान सिखाते हैं। संस्कारों को भगवान जैसा बनाने के लिए सभी यहाँ तत्पर हैं, उसका कारण मात्र एक है कि परमात्मा की शिक्षा सभी के लिए एक जैसी है, सभी को एक पुरूषार्थ सिखाया जाता है। प्रमाण यही तो माना जाता है कि भगवान ने अपने जैसा इंसान बनाया। सच में वहाँ ऐसे प्रभाव हैं कि आसुरी संस्कारों वाले कुछ मनुष्यों ने अपने सारे संस्कार बदल दिये और बिल्कुल देवता की चलन से चलने लगे हैं। ये सिर्फ परमात्मा का जादुई प्रकाश ही कर सकता है।

वो नूर, बना रहा कोहिनूर

लाखों लोग, परमात्मा के बच्चे, इस कार्य में संलग्न हैं कि हम परमात्मा के जैसा ही कोहिनूर बनेंगे, अमूल्य बनेंगे और बन रहे हैं। कार्य सुचारू रूप से चलना प्रमाण है कि परमात्मा है और वो यहीं है। स्व-परिवर्तन की लहर सबके अन्दर परमात्मा ने ही डाली है। वो शिवबाबा आज भी ज्ञान से, समझ से हमको अमूल्य पालना देकर अच्छे से अच्छा बना रहे हैं।

परमात्मा का कार्य अनवरत, प्रमाण भी

यहाँ हर रोज़ कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। बार बार अलर्ट करते, उन्हें सुरक्षित करते। और कौन करेगा ऐसा! सब कुछ दिन में अधैर्य हो जाते, सोचते कि ये कार्य अब हमसे नहीं होगा। हमारा धीरज खत्म हो रहा है, लोग बदल नहीं रहे, परिवर्तन नहीं हो रहा है। तो उस कार्य को छोड़ देते हैं। लेकिन एक परमात्मा ऐसा है जो ये कार्य अनवरत कर रहा है। ये है उस नूर का प्रभाव। आप उस नूर के प्रभाव को, उन कोहिनूरों में अगर देखना चाहते हैं तो एक बार यहाँ अवश्य आयें। उस पालना का साकार प्रमाण देखिये। शायद फिर कहेंगे कि ये तो सिर्फ परमात्मा ही कर सकते हैं। ये उन्हीं का कार्य है।

कैसे पहचानें... वो ही है परमात्मा...!!!

आज एक तरफ तो हम कहते हैं कि गॉड इज़ वन, सबका मालिक एक। वहीं दूसरी ओर हम कह देते कि मुझमें भी भगवान, तुम में भी भगवान। फिर और कई तो प्रकृति को भी भगवान मानते हैं। सृष्टि में इन विभिन्न तरह के भाव लिए वर्ग हैं। सिर्फ हमने जैसे उसको जाना, समझा, उसी से भावनायें बनाईं। पर देखा जाये तो इनमें से ज़्यादातर लोग यही मानते कि परमात्मा एक ही है। अगर हम इसे ही लें, तो फिर परमात्मा को कौन सी ऐसी कसौटी पर कसें कि उसे यथार्थ रूप से पहचाना जा सके? ताकि अगर कल ही भगवान मेरे सामने आ जाये तो हम उसे पहचान सकें। तो इसके लिए हैं ये मुख्य पाँच कसौटियाँ...

1. भगवान वो हो सकता जो सर्वमान्य हो

(ग्लोबली एक्सेप्टेड) हो। जिसको सभी धर्म वाले परमात्मा स्वीकार करें, जैसे हम कहते हैं कि राम भगवान है, लेकिन अन्य धर्म वाले तो कहते हैं कि ये आपके भगवान हैं। उसी श्रृंखला में यदि हमें ईशा मसीह कहें, तो हम कहेंगे कि ये तो क्रिश्चन धर्म के हैं। इसी तरह सभी ने अपने अपने भगवान बना रखे हैं, तो ये तो सर्वमान्य नहीं हुआ ना। भगवान तो वो है ना जिसे सभी मानें। कोई भी स्पष्ट नहीं है, तो उसे भगवान कैसे मानें!

2. परमात्मा वो है, जो सर्वोच्च हो

जिसके ऊपर कोई ना हो। उसका न कोई माता पिता हो, न बंधू-सखा, न शिक्षक, उसे कहेंगे परमात्मा। लेकिन जितने भी धर्म पिता हैं या दिव्य आत्मा हैं, उनके माता पिता बंधु सखा सब हैं, तो ये भगवान कैसे हो सकते है!

3. परमात्मा उसे कहा जायेगा जो सर्वोपरी हो

अर्थात् जिसका जन्म मरण के चक्र से कोई नाता न हो। परमात्मा को अजन्मा कहते हैं। अजन्मा के साथ साथ ये भी कहा जाता है कि उसे काल कभी नहीं खा सकता। लेकिन सभी को यहां शरीर छोड़ते और जन्म लेते दिखाया जाता है। तो ये भी उस कसौटी के साथ खरा नहीं उतरा।

4. परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो

जिसको तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो। जो त्रिकालदर्शी हो। लेकिन आज तक जो सुना व पढ़ा है कि विष्णु जी के पास समस्या का समाधान न होने पर शंकर जी के पास भेजते और वहाँ भी समाधान न हो तो ब्रह्मा जी के पास भेजते हैं।

5. परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों में अनंत हो

जिसकी महिमा के लिए कहते हैं कि धरती को कागज बनाओ, समुंदर को स्याही बनाओ और जंगल को कलम बनाओ, तो भी उसकी महिमा लिखी न जा सके। लेकिन यहां परमात्मा के गुणों को तो छोड़ो, अवगुणों की भी चर्चा है। इसलिए जो गुणों में अनंत होगा, उसमें अवगुण नहीं हो सकता।

तो ये है परमात्मा को परखने की पाँच कसौटी, जिसपर हमें अपनी मान्यताओं को कस कर देखना है कि क्या वे सत्य हैं या असत्य? जल्दी ही अपने सत्य पिता को पहचानो। कहीं उसे पहचानने में देर न हो जाये!

दैहिक धर्म का पर्दा, करता नैतिकता का उल्लंघन

मनुष्य के मन पर दैहिक धर्मों का पर्दा पड़ने से नैतिक मूल्यों का उल्लंघन हो रहा है। विश्व के सभी लोग देह के धर्म से ऊपर उठकर अपने निजी स्वधर्म को पहचान कर एकजुट हो जायें तो आध्यात्मिकता के ज़रिए सामाजिक विसंगतियां समाप्त हो जायेंगी। आधुनिकता के प्रभाव से डगमगाती आध्यात्मिकता को सम्बल देने का अद्भुत उदाहरण ब्रह्माकुमारी संगठन है, जिसका **वर्षों का इतिहास भटके हुए मानव को विकृतियों से छुड़ाकर सत्य मार्ग दिखाने का रहा है।**

- आनंद कृष्ण धाम अध्यक्ष आचार्य महामण्डलेश्वर आनंद चैतन्य महाराज सरस्वती।

संस्कार परिवर्तन का आधार - आध्यात्मिकता

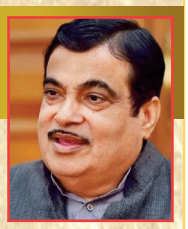

ब्रह्माकुमारीज़ ने जीवन जीने का सही मार्ग बताया है। इस आध्यात्मिक मार्ग से ही संस्कार का परिवर्तन होता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान का कार्य ही है अपने साथ दूसरों का भी श्रेष्ठ परिवर्तन करना। यहां की शिक्षा प्रणाली के मूल में ही श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण समाया हुआ है। जिससे ही एक सभ्य समाज का निर्माण होगा। - केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री माननीय नितिन गडकरी।

आत्मा की सर्वोच्च स्थिति का आधार - राजयोग

मैंने ये अनुभव किया कि राजयोग का निरंतर अभ्यास करने से हमारा मन शांत हो जाता है तथा व्यर्थ विचार हमें परेशान नहीं करते। राजयोग की यह यात्रा हमें आत्मिक शक्ति प्रदान करती है जिससे आत्मा को अपनी सर्वोच्च स्थिति की अनुभूति होती है। यदि हम एक स्वस्थ मन-मस्तिष्क चाहते हैं और वर्तमान में जीना चाहते हैं, तो हमें प्रतिदिन योगाभ्यास करना ही होगा। इससे हमारी निर्णय शक्ति बेहतर होगी। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां हृदय की आंतरिक यात्रा से मुझे यह जानने का अवसर मिला कि मैं कौन हूँ और इस ज्ञान ने मेरे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया।

- रामाकृष्णा ए.,हेड आर.ए. एंड सीनियर प्रिन्सीपल साइंटिस्ट्स,डी.आर.डी.ओ.-डी.एफ.आर.एल.,मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स,जी.ओ.आई.,मैसूर।

नारी शक्ति कर रही नये युग का शंखनाद

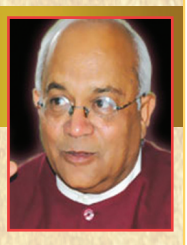

ब्रह्माकुमारी संस्था महिलाओं द्वारा संचालित सबसे महान एवं ब्रह्मचर्य का शपथ ग्रहण करने वाली एकमात्र संस्था है। यहां ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्मा समान आचरण से है। आसन, प्राणायाम, सिर्फ योगासन हैं, लेकिन चित्त का नियंत्रण राजयोग से ही होता है। इस कार्य के लिए मैं ब्रह्माकुमारीज़ की हृदय से प्रशंसा करता हूँ, जिसका आधार सम्पूर्ण पवित्रता है। मुझे विश्वास है कि आने वाले कुछ समय में ही भारत स्वर्णिम प्रभात की ओर देखेगा। इस संस्था के बहुआयामी कार्यों को देखकर हम निरूत्तर हैं। क्यों, क्योंकि ये एक वृहद् महिला संस्था है, और यही नारी शक्ति एक नये युग का शंखनाद कर रही है। - वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनैतिक विश्लेषक डॉ. वेद प्रताप वैदिक।

परमात्मा ही सत्य है और सत्य ही शिव है

गीता का उद्देश्य हमें अध्यात्म के शिखर पर ले जाना है। गीता एक आध्यात्मिक ग्रन्थ है। आज के भौतिक जगत में मानव उसे ही सत्य मानता है जो उसे दिखाई देता है, जो दिखाई नहीं देता उसे स्वीकार नहीं करता। लेकिन गीता हमें उस सत्य से अवगत करा देती है। परमात्मा ही सत्य है और सत्य ही शिव है। - स्वामी विवेकानन्द जी,सिद्धपीठ श्री मंगला काली मंदिर,हरिद्वार।